मध्यकालीन भारत का इतिहास

अरबो का आक्रमण

- 'मुहम्मद बिन कासिम' के नेतृत्व में अरबों ने भारत पर सफल आक्रमण किया।
- मुहम्मद बिन कासिम ने 712 ई. में सिंध पर आक्रमण किया।
- अरब आक्रमण के समय सिंध पर हिंदू राजा दाहिर का शासन था।
- इस युद्ध में दाहिर की पराजय हुई।
- सिंध विजय के पश्चात मुहम्मद बिन कासिम ने सर्वप्रथम धार्मिक कर जजिया लगाया था।
- अरब आक्रमण के विषय में महत्वपूर्ण सूचना याहया अल-बलधूरी कृत किताब फुतुह-अल-बलदान' तथा 'चचनामा' से मिलती है।
- अरबों के इस प्रथम आक्रमण का मुख्य उद्देश्य वस्तुतः धन संपदा लूटना और इस्लाम धर्म का प्रचार करना था।
- अरब आक्रमण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रभाव भारतीय सांस्कृतिक जनजीवन पर पड़ा।
- अरबों ने चिकित्सा, दर्शन, विज्ञान, गणित व शासन प्रबंध के ज्ञान के अर्जन में भारतीयों से प्रेरणा प्राप्त की।

महमूद गजनवी (998-1030 ई.)

- 962 ई. में अलप्तगीन नामक एक व्यक्ति ने गजनी में स्वतंत्र तुर्क राज्य की स्थापना किया।
- 977 ई. में अलप्तगीन का दास और दामाद सुबक्तगीन ने गद्दी पर अधिकार कर लिया।
- सुबुक्तगीन की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र महमूद गजनवी 27 वर्ष की अवस्था में 998 ई. में शासक बना।

  नोटः सुबुक्तगीन को अल हजेब अल-अलज की उपाधि दी गई।
- बगदाद के खलीफा ने महमूद गजनवी को 'यामीन-उद-दौला' एवं 'अमीन-उल-मिल्लाह' की उपाधियां प्रदान की थीं।
- महमूद ने भारत पर 17 बार आक्रमण किया, किंतु सभी आक्रमणों के सर्वस्वीकृत प्रमाण प्राप्त नहीं हुए है।
- भारत पर महमूद ने 1000 ई. से आक्रमण करना प्रारंभ किया।
- महमूद गजनवी ने 1001 ई. में हिंदूशाही राजा जयपाल के विरूद्ध आक्रमण किया, जिसमें जयपाल की पराजय हुई।
- महमूद गजनवी के भारत पर आक्रमण का मुख्य उद्देश्य धन लोलुपता थी।
- भारतीय इतिहास में महमूद गजनवी को 'लुटेरा एवं बुतशिकन (मूर्तिभंजक) कहा जाता है।

- ☞ महमूद गजनवी के प्रमुख अभियान – 1012 ई. में थानेश्वर, 1018 ई. में मथुरा, 1026 ई. में सोमनाथ थे।
- ☞ इसका सबसे उल्लेखनीय आक्रमण गुजरात के सोमनाथ मंदिर का आक्रमण था, उस समय वहां को शासक भीम प्रथम था।
- ☞ महमूद गजनवी का अंतिम भारतीय आक्रमण 1027 ई. में जाटों के विरूद्ध था।
- ☞ 1030 ई मे महमूद गजनवी की मृत्यु हो गई।
- ☞ महमूद गजनवी के दरबार में अलबरूनी, फिरदौसी, उत्बी तथा बैहाकी जैसे विद्वान निवास करते थे
- ☞ अलबरूनी को 'अबूरेहार' भी कहा जाता था। इसका जन्म 973 ई. में ख्वारिज्म (वर्तमान खीवा) में हुआ था।
- ☞ अलबरूनी, महमूद गजनवी के आक्रमण के समय भारत आया। उसकी पुस्तक 'किताब–उल हिंद तत्कालीन इतिहास जानने का महत्वपूर्ण स्रोत है।

मुहम्मद गोरी (1175 ई. - 1206 ई.)

- ☞ मुहम्मद गोरी गजनी के अधीन गोर प्रांत का शासक था, वह शंसबनी वंश से संबंधित था।
- ☞ मुहम्मद गोरी का प्रथम आक्रमण 1175 ई. में मुल्तान पर हुआ, उस समय मुल्तान पर करमाथी जाति के मुसलमान शासक थे।
- ☞ 1178 ई. में गोरी ने गुजरात पर आक्रमण किया, किंतु मूलराज द्वितीय ने अपनी योग्य एवं साहसी विधवा मां नायिका देवी के नेतृत्व में आबू पहाड़ के निकट गोरी को परास्त किया।
- ☞ पंजाब में इस समय गजनी राजवंश का अधिकार था, बाद में संपूर्ण पंजाब पर गोरी का अधिकार हो गया।

मुहम्मद गोरी के प्रमुख युद्ध

युद्ध	वर्ष	विपक्षी	परिणाम
तराइन (1) युद्ध	1991 ई.	पृथ्वीराज चौहान	पृथ्वीराज चौहान की विजय
ताराइन (2) युद्ध	1192 ई.	पृथ्वीराज चौहान	गोरी की विजय
चंदावर का युद्ध	1194 ई.	जयचंद	गोरी की विजय

- ☞ मुहम्मद गोरी के सिक्कों पर एक ओर कलमा तथा दूसरी ओर लक्ष्मी की आकृति अंकित रहती थी।
- ☞ मुहम्मद गोरी अपने द्वारा विजित भारतीय प्रदेशों को अपने गुलाम सेनापति कुतुबुद्दीन को सौंप कर गजनी वापस चला गया।

सल्तनत काल (1206 ई. - 1526 ई.)

- ☞ 1206 ई. में गोरी की मृत्यु के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक ने गुलाम या ममलूक वंश की स्थापना किया।
- ☞ कुतुबद्दीन ऐबक की राजधानी लाहौर थी।
- ☞ कुतुबद्दीन ऐबक को भारत में तुर्को राज्य का संस्थापक भी माना जाता है। सिंहासन पर बैठने पर उसने सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की।
- ☞ ऐबक ने न अपने नाम का खुतबा पढ़वाय और न ही अपने नाम के सिक्के चलाए। बाद में गोरी के उत्तराधिकारी महमूद ने उसे सुल्लान स्वीकार कर लिया।
- ☞ कुतुबद्दीन ऐबक को 'लाखबख्श' (लाखों में देने वाला) एवं 'कुरानख्वां' कहा गया।
- ☞ कुतुबद्दीन ऐबक के सेनापति बख्तियार खिलजी ने नालंदा विधवविद्यालय को ध्वस्त किया था।
- ☞ ऐबक ने दिल्ली में 'कुव्वत-उल-इस्लाम' और अजमेर में 'अढ़ाई दिन का झोपड़ा' नामक मस्जिदों का निर्माण कराया था।

  नोट- कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद एक हिंदू मंदिर के चबूतरे पर मुस्लिम आक्रमणकारियों द्वारा गिराए गए 27 हिंदू और जैन मंदिरों की सामग्री से बनाई गई थी। जबकि बढ़ाई दिन का झोपढ़ा पहले एक संस्कृत विद्यालय और मंदिर था, जिसे चौहान सम्राट विग्रहराज या बीसलदेव ने बनवाया था।
- ☞ कुतुबद्दीन ऐबक ने कुतुबमीनार की नींव रखी, जिसे इत्तुतमिश ने पूरा करवाया।
- ☞ कुतुबद्दीन ऐबक की मृत्यु चौगान के खेल (आधुनिक पोलो की भांति का एक खेल) मे घोड़ो से गिरने पर 1210 ई. में हुई थी। उसे लाहौर मे दफनाया गया।
- ☞ कुतुबुद्दीन ऐबक का उत्तराधिकारी आरामशाह हुआ, जिसने केवल आठ महीने शासन किया।

इल्तुतमिश (1210- 36 ई.)

- ☞ इल्तुतमिश ने 1210 ई. में आरामशाह की हत्या कर सल्तनत की गद्दी प्राप्त की।
- ☞ कुतुबुद्दीन का गुलाम और दामाद इल्तुतमिश इल्बारी तुर्क था।
- ☞ कुतुबद्दीन ऐबक की मृत्यु के समय इत्तुतमिश बदांयू का सूबेदार था।
- ☞ इल्तुतमिश को दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- ☞ इल्तुतमिश ने दिल्ली को सल्तनत की राजाधानी के रूप में स्थापति किया।
- ☞ मुहम्मद गोरी ने 1206 ई. में खोखरों के विद्रोह के समय इल्तुतमिश की असाधारण योग्यता के कारण ने उसे दासता से मुक्त कर दिया था।
- ☞ 1229 ई. में इल्तुमिश का बगदाद के खलीफा ने 'सुल्तान -ए-आजम' की उपाधि प्रदान कर उसके शासन को वैधानिक स्वीकृति प्रदान की।
- ☞ इल्तुतमिश ने तराईन के तृतीय युद्ध (1215-16ई.) में यल्दोज को पराजित किया। 1221 ई. में

कालिंजर, 1226 ई में रणथंभौर, 1227 ई. में मंडोर को विजित किया।

- इल्तुमिश ने अपने वफादार गुलाम अमीरों की टुकड़ी रखी, जिसे 'तुर्कान-ए-चहलगानी' या 'चालीसा' कहा जाता था।
- इल्तुतमिश ने सल्तनत काल में दो महत्वपूर्ण सिक्के चांदी का 'टंका' (175 ग्रेन) और ताबें का 'जीतल' आरंभ किया था सिक्कों पर टकसाल का नाम लिखवाने की परंपरा भी शुरू की।
- इल्तुतमिश के शासनकाल में मंगोल नेता चंगेज खां ख्वारिज्म के मंगबरनी का पीछा करते हुए भारत की उत्तर-पश्चिमी सीमा पर आया था।
- इल्तुतमिश को भारत में 'इक्ता प्रथा' की शुरूआत का श्रेय दिया जाता है।
- इल्तुतमिश की मृत्यु 1236 ई. में हुई।
- इल्तुमिश की मृत्यु के बाद तुर्की अमीरों ने उसके पुत्र रूकनुद्दीन फिरोजशाह को गद्दी पर बैठाया।
- रूकनुद्दीन को जनसमूह द्वारा अपदस्थ कर रजिया को सुल्तान बनाया गया। रजिया के मामले में पहली बार दिल्ली की जनता ने उत्तराधिकारी के प्रश्न पर स्वयं निर्णय लिया।

रजिया सुल्तान (1236 -40 ई)

- रजिया मध्कालीन भारत की प्रथम महिला शासिका थी।
- रजिया पर्दा प्रथा त्याग कर पुरूषों के समान वस्त्र, कुबा (कोट) और कुलाह (टोपी) धारण कर शासन का कार्य स्वयं संभालती थी।
- मिनहाल-ए-सिराज (तबकात-ए-नासिरी का लेखक) के अनुसार, रजिया ने 3 वर्ष 6 माह 6 दिन शासन किया।
- उसने निजामुल मुल्क जुनैदी को वजीर के पद से हटा दिया। तुर्की वर्चस्व को तोड़ने के लिए हब्सी सरदार मलिक याकूत को 'अमीर-ए-आखूर' का पद प्रदान किया।
- रजिया के विरूद्ध तबरसिंह (भंटिडा) का इक्तेदार अल्तूनिया ने विद्रोह किया था। रजिया ने अल्तूनिया से विवाह कर तुर्की सरदारों के विद्रोह को दबाने का प्रयास किया, किंतु वह असफल रही।
- रजिया की हत्या 1240 ई. को डाकुओं द्वारा कैथल के पास कर दी गई।
- रजिया की मृत्यु के बाद बहरामशाह 1240 ई. में गद्दी पर बैठा, जिसकी हत्या 1242 ई. में कर दी गई।
- बहरामशाह की हत्या के बाद दिल्ली का सुल्तान अलाउद्दीन मसूदशाह (1242-1246 ई.) बना।
- 1246 ई. में बलबन द्वारा किए गए षडयंत्र के द्वारा अलाउद्दीन मसूदशाह को अपदस्थ कर नासिरूद्दीन महमूद को सुल्तान बना दिया गया।

- ☞ नासिरूद्दीन महमूद सीधा-सादा जीवन व्यतीत करने वाला शासक था। जिसके विषय में कहा जाता है कि वह टोपी सिलकर अपना जीवन निर्वाह करता था।
- ☞ मिनहाज-ए-सिराज ने अपनी पुस्तक 'तबकात-ए-नासिरी' इसे ही समर्पित किया।
- ☞ 1249 ई. में बलबन ने अपनी पुत्री का विवाह सुल्तान नासिरूद्दीन से कर दिया।
- ☞ नासिरूद्दीन ने बलबन को 'उलुग खां' की उपाधि और 'नायब-ए-मामलिकात' का पद दिया।
- ☞ 1265 ई. में नासिरूद्दीन महमूद की मृत्यु होने पर बलबन ने स्वयं को सुल्तान घोषित कर दिया और उत्तराधिकारी बना।

गयासुद्दीन बलबन (1266- 1287 ई.)

- ☞ बलबन (1266-1287ई.) का पूरा नाम गयासुद्दीन बलबन था। वह इल्तुतमिश का गुलाम एवं चालीसा का सदस्य भी था।
- ☞ बलबन ने तुर्कान-ए-चहलगानी का विनाश किया था।
- ☞ बलबन 1266ई. में गयासुद्दीन बलबन के नाम से दिल्ली की गद्दी पर बैठा। यह मंगोलो से दिल्ली की सुरक्षा करने में सफल रहा।
- ☞ बलबन ने सुल्तान की प्रतिष्ठा के लिए 'रक्त और लौह' की नीति अपनाई थी।
- ☞ बलबन ने राजा को धरती पर ईश्वर का प्रतिनिधि 'नियामत-ए-खुदाई माना।
- ☞ बलबन का मानना था कि सुल्तान 'जिल्ले अल्लाह' या 'जिल्ले इलाही' अर्थात 'ईश्वर का प्रतिबिब' है।
- ☞ बलबन ने मंगोलों का मुकाबला करने के लिए 'दीवाने-अर्ज' नाम सैन्य विभाग की स्थापना की।
- ☞ बलबन ने 'सिजदा' और 'पाबोस' की प्रथा को शुरू करवाए जो मूलत: ईरानी परंपराओ से ग्रहण की गई थी।
- ☞ बलबन ने अपने दरबार में प्रतिवर्ष इरानी (फारसी) त्योहार 'नौरोज' मनाने की प्रथा शुरू की।
- ☞ विख्यात कवि अमीर खुसरों तथा अमीर हसन ने अपना साहित्यिक जीवन शाहजादा मुहम्मद के समय शुरू किया था।

  नोट: अमीर खुसरो को भारत का तोता अथवा 'तूती-ए-हिंद' तथा अमीर हसन-ए-देहलवी को भारत का सादी' कहा जाता था।
- ☞ बलबन की मृत्यु के बाद उसका पौत्र कैकुबाद उसका उत्तराधिकारी हुआ। उसके पश्चात् अल्पकाल के लिए क्यूमर्स शासक बना।
- ☞ आरिज-ए-मुमालिक (जलालुद्दीन) ने क्यूमर्स की हत्या करके राजगद्दी पर अधिकार कर लिया।
- ☞ इस प्रकार दिल्ली सल्तनत से गुलाम वंश का अंत हो गया।

खिलजी वंश (1290-1320 ई.)

गुलाम वंश के पलतन के पश्चात् 1290 ई. में जलादुद्दीन फिरोज खिलजी ने खिलजी वंश की स्थापना की ।

- ☞ सुल्तान कैकुबाद ने इसे 'शइस्त खां' की उपाधि और 'आरिज़्-ए-मुमालिक' अर्थात सेना मंत्री का पद दिया था।
- ☞ जलालुद्दीन खिलजी ने दिल्ली के निकट 'किलोखरी' को अपनी राजधानी बनाया।
- ☞ जलालुद्दीन उदान निरंकुशवाद के आदर्श को अपनाया।
- ☞ जलालुद्दीन ने एक नए विभाग दिवाने-वक्फ का गठन किया, जिसका कार्य आय-व्यय के कागजात की देख भाल करना था।
- ☞ जलालुद्दीन खिलजी के काल में दिल्ली के संत सीदीमौला को हाथी के पैरो के नीचे कुचलवा दिया गया था।
- ☞ जलालुद्दीन खिजली की हत्या उसके भतीजे और दामाद अलाउद्दीन खिलजी द्वारा 1296 ई. में धोखे से कड़ा मानिकपुर में कर दी गई।

अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई.)

- ☞ जलालुद्दीन की हत्या के बाद अलाउद्दीन खिजली (अलीगुर्शप) शासक बन बैठा।
- ☞ अलाउद्दीन खिलजी ने अपने सिक्कों पर स्वंय का नाम द्वितीय सिकदंर के रूप में उत्कीर्ण करवाया।
- ☞ अलाउद्दीन के आक्रमण के समय देवगिरि का शासक रामचंद्रदेव था।
- ☞ अलाउद्दीन ने अपनी गुजरात विजय के दौरान मलिक काफूर को प्राप्त किया था।
- ☞ मलिक काफूर को 'हजार दीनारी' भी कहा जाता था।
- ☞ गुप्तचर विभाग का मुख्य अधिकारी 'बरीद-ए-मुमालिक' था। उसके अंतर्गत अनेक 'बरीद' थे।
- ☞ अलाउद्दीन ने राजस्व व्यवस्था से भ्रष्टाचार और लूट को खत्म करने के लिए एक नए विभाग 'दीवन-ए-मुस्तखराज' की स्थापना की।
- ☞ अलाउद्दीन ने सीरी का किला, हजार खम्भा महल, जमात-खाना मस्जिद और अलाई दरवाजा का निर्माण करवाया था।
- ☞ अलाउद्दीन ने केंद्र पर एक बड़ी और स्थायी सेना रखी, जिसे नकद वेतन देता था।
- ☞ अलाउद्दीन ने सैनिकों की हुलिया लिखने एवं घोडो को दागने की प्रथा आरंभ किया।
- ☞ अलाउद्दीन पहला सुल्तान था, जिसने भूमि की पैमाइश कराकर लगान वसूल करना आरंभ किया
- ☞ अलाउद्दीन खिलजी ने उपज का 50% भाग भूमिकर (खराज) के रूप में लिया।
- ☞ अलाउद्दीन ने लूट के धन(खम्स) में सुल्तान का हिस्सा 1/5 के स्थान पर 4/5 भाग कर दिया

☞ इब्नबतूता ने रेहला, इसामी ने फतुहात-ए-सलातीन और अमीर खुसरो ने खजाइन-उल-फतूह की रचना की।

☞ अमीर खुसरों, अलाउद्दीन खिजली का दरबारी कवि था।

☞ अलाउद्दीन खिलजी ने अलाई दरवाजा एवं हौज-ए-खास का निर्माण करवाया था।

☞ सल्तनतकालीन शासक अलाउद्दीन खिलजी ने 'सर्वाजनिक वितरण प्रणाली' प्रारंभ की थी।

☞ अलाउद्दीन खिलजी द्वारा लगाए गए दो नवीन कर थे-

1. घरी कर - जो कि घरों एवं झोपड़ियों पर लगाया जाता था।
2. चराई कर - जो कि दुधारू पशुओं पर लगाया जाता था।

सल्तनत कालीन प्रमुख कर

कर		कर के प्रकार
जजिया कर	-	गैर-मुस्लिमों से लिया जाने वाला कर
जकात कर	-	मुस्लिमों से लिया जाने वाला धार्मिक कर
खुम्स	-	युद्ध में लूट से प्राप्त कर
खराज	-	गैर-मुस्लिम कृषकों से लिया जाने वाला कर

☞ इसने 'परवाना-नवीस' नामक अधिकारी की नियुक्ति किया, जो वस्तुओं का परमिट जारी करता था।

☞ इसके समय में बाजार दो प्रकार के थे - 1. मंडी (खाद्यान्न बजाजार) 2. सराए-ए-अदल (निर्मित वस्तु, वस्त्र, जड़ी-बूटी आदि)।

☞ बाजार पर नियंत्रण रखने के लिए अलाउद्दीन ने दीवान-ए-रियासत (संपूर्ण बाजार व्यवस्था का संचालक) शहना-ए-मंडी (बाजार अधीक्षक) नामक नवीन पद का सृजन किया ।

☞ अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु 1316 ई. मे हुई।

☞ अलाउद्दीन खिलजी का पुत्र मुबारक खिजली 1316 ई. में दिल्ली के सिंहासन पर बैठा।

☞ यह दरबार में कभी-कभी स्त्रियों के वस्त्र पहन कर आ जाता था।

☞ कुतुबुद्दीन मुबारक शाह खिजली ने स्वयं को खलीफा घोषित किया और 'अल इमाम' उल इमाम, खिलाफत-उल्लाह आदि उपाधियां धारण की।

☞ कुतुबुद्दीन मुबारक शाह खिलजी के बाद नासिरूद्दीन खुसरोशाह शासक बना, जो खिजली वंश का अंतिम शासक था।

तुगलक वंश (1320-1412ई.)

- गयासुद्दीन तुगलक या गाजी मलिक तुगलक वंश का प्रथम शासक था।
- गयासुद्दीन तुगलक ने 1320-1235 ई. तक शासन किया।
- गयासुद्दीन तुगलक ने खुतो और मुकद्दमों के पुराने अधिकारो की बहाली की।
- इसने तुगलकाबाद नामक नगर का निर्माण करवाया।
- सुल्तान गयासुद्दीन तथा निजामुद्दीन औलिया के बीच संबंध कटुतापूर्ण हो एग थें। औलिया ने कहा था कि 'हनुज दिल्ली दूरस्त' (हूजूर दिल्ली अभी दूर है)।
- इसने सिंचाई के लिए नहरों का निर्माण करवाया। संभवत: नहारों का निर्माण करवाने वाला यह पहला शासक था।
- वह 'गाजी' की उपाधि धारण करने वाला दिल्ली का प्रथम सुल्तान था।

मुहम्मद बिन तुगलक (1325-1351ई.)

- गयासुद्दीन की मृत्यु के बाद जौना खां या मुहम्मद बिन तुगलक (1325-1351ई.) सुल्तान बना। उसके समय में तुगलक साम्राज्य 23 प्रांतो में विभाजित था।
- मुहम्मद तुगलक ने चांदी के सिक्कों के स्थान पर तांबे का सिक्का प्रतीक मुद्रा के रूप में प्रचलित किया।
- दीवान-ए-अमीर-कोही नामक विभाग, जो कृषि से संबंधित था, मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा स्थापित किया गया।
- मोरक्को यात्री इब्नबतूता सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में 1333 ई. में दिल्ली आया था।
- सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक ने इसे दिल्ली का प्रमुख काजी नियुक्त किया। इस पद पर इसने आठ वर्ष तक कार्य किया। इस पद पर इसने आठ वर्ष तक कार्य किया।
- इब्नबतूता ने अपनी यात्रा वृतांत अरबी भाषा में 'किताब-उल-रेहला' नामक ग्रथ में लिखा है।
- मुहम्मद बिन तुगलक एक विद्वान शासक था जो कि अरबी, फारसी की जानकारी के साथ-साथ खगोलशास्त्र, ओषधिशास्त्र, तर्कशास्त्र एवं दर्शन में भी रूचि रखता था।
- जैन धर्माचार्य जिन प्रभुसूरि जैसे अनेक विद्वान संतों को इसने संरक्षण प्रदान किया।
- मुहम्मद बिन तुगल हिंदुओ का त्योहार होली में सम्मिलित होता था।
- मुहम्मद बिन तुगलक की प्रमुख योजनाए दोआब कर में वृद्धि, राजधानी परिवर्तन (दिल्ली से देवगिरी) सांकेतिक मुद्रा का चलन और खुरासान तथा कराचिल अभियान थी।
- मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में हरिहर और बुक्का नामक दो भाइयों ने दक्षिण में 1336

ई. में स्वतंत्र राज्य विजयनगर की स्थापना की।

- 1351ई. को मुहम्मद बिन तुगलक की मृत्यु हो गई।
- सुल्तान के निधन पर बदायूनी लिखता है– ''सुल्तान को उसकी प्रजा से और प्रजा को अपने सुल्तान से मुक्ति मिल गई''।
- 1351ई. में मुहम्मद तुगलक की मृत्यु के बाद उसका चचेरा भाई 'फिरोजशाह तुगलक' (1351-1388) सुल्तान बना।

फिरोजशाह तुगलक (1351-1388ई.)

- फिरोजशाह तुगलक ने हिसार, फतेहाबाद, फिरोजपुर, फिरोजाबाद तथा जौनपुर (जौना खां की स्मृति में) नामक नए नगर बसाए तथा अनेक नहरें भी बनवाई।
- उसने ब्राह्मणों पर भी जजिया कर लगाया।
- सर्वप्रथम 'लोक निर्माण विभाग' की स्थापना का श्रेय फिरोशाह तुगलक को दिया जाता है।
- 'हब-ए-शर्ब' अर्थात सिंचाई कर लगाने वाला फिरोशाह तुगलक दिल्ली का प्रथम सुल्तान था।
- फिरोजशाह तुगलक ने अशोक के दो स्तंभो (टोपरा तथा मेरठ) को दिल्ली ले गया था।
- इसने सैनिक सेवा को वंशानुगत कर दिया।
- फिरोजशाह तुगलक को दासों का बहुत बड़ा शौक था, उसके समय में दासों की संख्या एक लाख अस्सी हजार तक पहुच गई थी।
- इसने दासों की देख-भाल के लिए एक पृथक विभाग 'दीवान-ए-बंदगान' का गठन किया।
- फिरोजशाह तुगलक द्वारा स्थापित दार-उल-शफा एक खैराती अस्पताल था।
- फिरोजशाह तुगलक ने अपनी आत्मकथा 'फुतुहात-ए-फिरोजशाही की रचना की।
- इसने जियाउद्दीन बरनी एवं शम्स-ए शिराज अफीफ को संरक्षण प्रदान किया था।
- इसने 'अद्धा' एवं 'विख' नामक सिक्के जारी किए, जो तांबे एवं कांसे से निर्मित थे
- फिरोज तुगलक ने ज्वालामुखी मंदिर को नष्ट कर उसके पुस्तकालय से 1300 ग्रंथां में से कुछ को फारसी में विद्वान अजीजुद्दीन खालिद द्वारा 'दलायते-फिरोजशाही नाम से अनुवाद करवाया।
- फिरोज तुगलक की मृत्यु 1388 ई. में हो गई।
- नासिरूद्दीन महमूद (1394-1412ई.) तुगलक वंश का अंतिम शासक था।
- इसके शासनकाल में ख्वाजा जहां ने जौनपुर नामक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।
- नासिरूद्दीन महमूद के शासनकाल में तैमूर ने भारत पर आक्रमण (1398ई.) किया।
- नासिरूद्दीन महमूद के लिए प्रचलित था– ''शहंशाह की सल्तनत दिल्ली से पालन तक फैली हुई

है''

नोट - 1412 ई. में नासिरूद्दीन महमूद की मृत्यु के बाद तुगलक वंश का शासन समाप्त हो गया। 1413 ई. में सरदारों की सम्मति से दौलत खां लोदी सुल्तान बना, परंतु खिज्र खां ने दिल्ली पर आक्रमण कर दौलत खां को पराजित करके उसे हिसार के किले में कैद कर दिया और 1414 ई. में दिल्ली के सिंहासन पर बैठकर एक नवीन राजवंश 'सैय्यद वंश' की स्थापना की। इस प्रकार तुगलक वंश का शासन 1412 ई. में नासिरूद्दीन महमूद शाह की मृत्यु के साथ ही समाप्त हो गया।

सैय्यद वंश (1414-1451ई.)

☞ सैय्यद वंश के संस्थापक खिज्र खां ने मंगोल आक्रमणकारी तैमूर को सहयोग प्रदान किया था।

☞ खिज्र खां को तैमूर ने पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत (लाहौर, मुल्तान और दीपालपुर) का गवर्नर बनाया था।

☞ खिज्र खां ने सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की। वह रैयत-ए-आला' की उपाधि से ही संतुष्ट रहा।

☞ खिज्र खां के उपरांत मुबारक शाह (1421-1434 ई.) शासक बना। इसने 'तारीख-ए-मुबारक शाही' के लेखक 'याहिया बिन सरहिंदी' को संरक्षण प्रदान किया।

☞ अलाउद्दीन आमशाह (1443-1451ई.) इस वंश का अंतिम शासक था।

लोदी वंश (1451-1526ई.)

☞ बहलोल लोदी (1451-1489 ई.) ने 'लोदी वंश' की स्थापना 1451ई में की

☞ इसने जौनपुर राज्य को दिल्ली सल्तनत में मिला लिया।

☞ बहलोल लोदी का उत्तराधिकारी सिकंदर लोदी था।

☞ यह लोदी वंश का सर्वश्रेष्ठ शासक था।

☞ इसने नाप के लिए एक पैमाना 'गज-ए-सिकंदरी' प्रारंभ किया।

☞ सिंकंदर लोदी के आदेश से एक 'आयुर्वेदिक ग्रंथ' का फारसी में अनुवाद किया गया, जिसका नाम 'फरहंगे सिकंदरी' रखा गया।

☞ सिकंदर लोदी के समय गायन विद्या का एक श्रेष्ठ ग्रंथ 'लज्जत ए- सिकंदर शाही की रचना की

☞ सिकंदर लोदी शहनाई सुनने का बहुत शौकीन था।

☞ सिंकदर लोदी 'गुलरूखी' उपनाम से कविताएं लिखता था।

नोट सिकंदर लोदी ने 1504 ई. में राजस्थान के शासकों पर अपने अधिकार को सुरक्षित रखने के लिए आगरा नामक नवीन नगर बसाया।

☞ इसने ताजिया निकालने तथा मुस्लिम महिलाओं को पीरों और संतों की मजार पर जाने पर रोक लगा दिया।

- सिकंदर लोदी ने हिंदुओं पर पुनः जजिया कर लगा दिया।
- सुल्तान सिकंदर ने अनाज से जकात (संपत्ति कर) समाप्त कर दिया।
- मोठ मसिजद का निर्माण सिकंदर लोदी के शासनकाल में हुआ था। यह मस्जिद लोदी स्थापत्य शैली का सुंदर उदाहरण है।
- सिकंदर लोदी की मृत्यु के पश्चात उसका ज्येष्ठ पुत्र इब्राहिम लोदी गद्दी पर बैठा।
- इब्राहिम लोदी को राणा सांगा ने 1517 ई. में हुए घटोली के युद्ध में पराजित किया था।
- अप्रैल, 1526ई. में पानीपत के मैदान में बाबर से उसका युद्ध हुआ, जिसमें इब्राहिम लोदी पराजित हुआ। लोदियों के पतन के साथ ही दिल्ली सल्तनत का भी अंत हो गया।

दिल्ली सल्तनत - शासन व्यवस्था

- 'सुल्तान' की पदवी का प्रारंभ तुर्की शासकों द्वारा किया गया।
- महमूद गजनवी सुल्तान की उपाधि धारण करने वाला पहला शासक था।
- दिल्ली सल्तनत में अधिकांश शासकों ने खलीफा के नायाब के रूप में ही शासन संचालन किया।
- अलाउद्दीन ने खलीफा की सर्वोच्चता को चुनौती दिया, जबकि कुतुबुद्दीन मुबारक खिजली ने स्वयं को ही खलीफा घोषित किया।
- केंद्रीय शासन का प्रधान सुल्तान था।
- सल्तनत काल में मंत्रिपरिषद को 'मजलिस-ए-खलवत कहा जाता था।
- मजलिस-ए-खलवत की बैठक मंजलिस-ए-खास में होती थी।
- वजीर- राज्य का प्रधानमंत्री 'वजीर' कहलाता था। उसके कार्याक्रम को 'दीवान-ए-विजारत' (राजस्व विभाग) कहते थे।
- वजीर के अतिरिक्त, इस विभाग के कई अन्य अधिकारी भी थे। इनमें मुशरिफ-ए-मुमालिक (महालेखाकार) तथा मुस्तौफी-ए-मुमालिक (महालेखा परीक्षक) महत्वपूर्ण थे। इन दोनों को क्रमशः आय-व्यय का प्रभार दिया गया था।

सल्तनत कालीन प्रमुख विभाग

- **दीवाने इंशा** - राजकीय पत्र-व्यवहार विभाग
- **दीवाने रसालत** - विदेश विभाग
- **काजी-उल-कुजात**- न्याय विभाग
- **सद्र-उस-सुदूर** - यह धर्म विभाग एवं दान विभाग का प्रमुख होता था।
- **राज्य का प्रधान**- 'काजी' एवं सद्र-उस-सुदूर' प्रायः एक ही व्यक्ति हुआ करता था।
- दीवान-ए-बरीद, बरीद-ए-मुमालिक गुप्तचर विभाग के प्रधान अधिकारी थे।

- **दीवान-ए-रियासत** - अलाउद्दीन खिलजी ने बाजार नियंत्रण के लिए एक विभाग स्थापित किया था।
- **दीवान-ए-मुस्तखराज** - इस विभाग की स्थापना अलाउद्दीन खिजली ने की थी। इसका प्रमुख कार्य बकाया राजस्व वसूलना था।
- **वकील-ए-दर** - यह शाही महल एवं सुल्तान की व्यक्तिगत सेवाओं की देख-भाल करता था।
- **अमीर-ए-हाजिब**- दरबारी शिष्टाचार के लिए जिम्मेदार था।
- **अमीर-ए-शिकार** - सुल्तान के अंगरक्षकों का अधिकारी
- **शहना-ए-इस्तिहाक** - पेशन विभाग से संबंधित होता था।
- **अमीर-ए आखुर** - अश्वशाला का प्रधान
- **अमीर-ए-मजलिस** - शाही उत्सवों एवं दावतों का प्रबंध करता था।
- **सर-ए-जावार** - सुल्तान के अंगरक्षकों का अधिकारी
- **शहना-ए-पील** - यह इस्तिशाला का अध्यक्ष होता था।
- **दीवान-ए-खैरात** - दान विभाग कहा जाता था।
- **दीवान-ए-बंदगान** - इसे दास विभाग कहा जाता था।
- दीवान-ए-इस्तिहाक, दीवान-ए-खैरात और दीवान-ए-बंदगान की स्थापना फिरोजशाह तुगलक ने किया था।
- **मुतशर्रिफ**- यह कारखानों के प्रमुखों का प्रमुख होता था।

  मुस्लिम कानून के चार स्त्रोत थे-

  (i) **कुरान** - मुस्लिम कानूनों का प्रमुख स्रोत।

  (ii) **हदीस** - इसमें पैगम्बर के कथनों एवं कार्यो का उल्लेख है। कुरान द्वारा यदि समस्या का समाधान नही होता, तो इसका सहारा लिया जाता है।

  (iii) **इजमा** - मुजतहिद द्वारा व्याख्या किया गया कानून, अल्लाह की इच्छा का ही रूप माना जाता है।

  (iv) **कयास** - इसमें तर्क अथवा विश्लेषणों के आधार पर कानूनों की व्याख्या की गई है।

  (v) **काजी-उल-कुजात**- सुल्तान के बाद न्याय का सर्वोच्च अधिकारी होता था।
- दिल्ली सल्तनत में मुकदमो का निर्णय काजियों और मुफ्तियों की सहायता से किया जाता था। काजी एवं मुफ्ती का पद वंशानुगत होता था।
- अमीर-ए-दाह नामक विभाग काजी के मुकदमों में सहायता करता था।
- दिल्ली सल्तनत अनेक प्रांतों में विभाजित था, जिसे 'इक्ता' कहा जाता था।

☞ इक्ता का शासन मुक्ती या इक्तेदार द्वारा संचालित किया जाता था।
☞ इक्ता का शिकों (जनपदों) में बांटा गया था, जिसका प्रमुख अधिकारी शिकदार होता था।
☞ शिकों को परगनों में बांटा गया था।
☞ आमिल, परगना का मुख्य अधिकारी होता था।
☞ प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी।
☞ सल्तनत काल में भू-राजस्व के प्रमुखत: तीन प्रकार प्रचलित थे-

(i) बंटाई जिसमें वास्तविक उपज में से राज्य का हिस्सा निर्धारित कर दिया जाता था। इस प्रणाली के विभिन्न नाम हुआ करते थे- किस्मत-ए-गल्ला, गल्ला बख्शी अथवा हासिल आदि

(ii) मसाहत- भूमि के पैमाइश पर आधारित, उपज का निर्धारण किया जाता था।

(iii) मुक्ताई- यह लगान निर्धारण की एक मिश्रित प्रणाली थी। यह हिस्सा बंटाई प्रणाली पर निधारित थी।

☞ गयासुद्दीन सिंचाई के लिए नहर बनवाने वाला पहला शासक था।
☞ सोंधर या तकावी (ऋण) मुहम्मद तुगलक द्वारा शुरू किया गया।
☞ शासन के नियंत्रण वाली भूमि को 'खालसा भूमि' कहते थी।
☞ अलाउद्दीन ने दान दी गई भूमि को छीनकर खालसा भूमि में परिवर्तित कर दिया।
☞ सल्तनतकालीन राजस्व (कर) के प्रकार-

जजिया - गैर मुस्लिमों से लिया जाने वाला सुरक्षा कर।

जकात - मुस्लिमों से लिया जाने वाला धार्मिक कर (संपत्ति का 40 वां भाग)

खराज- गैर-मस्लिमों से लिया जाने वाला भूमि कर।

उश्र - मुस्लिमों से लिया जाने वाला भूमि कर।

☞ दिल्ली स्थित सुल्तान की सेना को 'हश्म-ए-कल्ब' या -कल्ब-ए-सुल्तानी' कहा जाता था।
☞ सल्तनतकालीन सैन्य व्यवस्था मंगोलों की भांति 'दशमलव प्रणाली' पर आधारित थी।
☞ अलाउद्दीन सैनिकों को नकद वेतन प्रदान करता था।
☞ फिरोजशाह तुगलक ने सैनिकों को वंशानुगत कर दिया था।
☞ सल्लनतकालीन सेना के मुख्य रूप से तीन भाग थे-घुड़सवार सेना, गजसेना और पैदल सेना।
☞ रेशम के कीड़े पालने की प्रथा दिल्ली सल्तनत में ही प्रचलित हुई।
☞ व्यापारियों के समूह को 'तुज्जार-ए-खास' कहा जाता था।
☞ देवल (गुजरात) मध्यकाल में समृद्ध शहर माना गया यह अंतरराष्ट्रीय बंदरगाह का कार्य भी करता था।

☞ लाहौर एवं बयाना नील के लिए प्रसिद्ध थे।

दिल्ली सल्तनतकाल की इमारतें	निर्माणकर्ता
कुव्वल-उल-इस्लाम मस्जिद, अढ़ाई दिन का झोपड़ा, कुतुबमीनार	कुतुबुदीन ऐबक
नासिरूद्दीन महमूद का मकबरा या सुल्तानगढ़ी	इल्तुतमिश
तुगलकाबाद	गयासुद्दीन तुगलक
अलाई दरवाजा, जमात खाना मस्जिद	अलाउद्दीन खिलजी

सल्तनतकालीन प्रमुख शासक

गुलाम वंश (1206-1320)

कुतुबुद्दीन ऐबक	1206-1210ई.
आरामशाह	1210-1210ई.
सुल्तान इल्तुततिश	1210- 1236ई.
रूकनुद्दीन फिरोजशाह	1236-1236ई.
सुल्तान रजिया	1236-1240ई.
मुइनुद्दीन बहरामशाह	1240-1242ई.
अल्लाउद्दीन मसूदशाह	1242-1246ई.
नासिरूद्दीन महमूद	1246-1266ई.
गयासुद्दीन बलबन	1266-1287ई.
कैकुबाद क्यूमर्स	1287-1290ई.

खिलजी वंश (1290-1320ई.)

जलालुद्दीन फिरोजशाह खिजली	1290-1296ई.
अलाउद्दीन खिलजी	1296-1316ई.
कुतुबुद्दीन मुबारक खिजली	1316-1320ई.
नासिरूद्दीन खुसरशाह	1320-1320ई.

तुगलक वंश (1320-1414ईस)

गयासुद्दीन तुगलक	1320-1325ई.
मुहम्मद बिन तुगलक	1325-1351ई.
फिरोजशाह तुगलक	1351-1388ई.

गयासुद्दीन तुगलक द्वितीय	1388-1389ई.
अबू बक्र	1389-1390ई.
नासिरूद्दीन मुहम्मदशाह	1390-1394ई.
अलाउद्दीन सिकंदरशाह	1394-1394ई.
नासिरूद्दीन महमूदशाह	1394-1412ई.

सैयद वंश (1414-1451ई.)

खिज्र खां	1414-1421ई.
मुबारक शाह	1421-1434ई.
मुहम्मद शाह	1434-1445ई.
अलाउद्दीन आलमशाह	1445-1451ई.

लोदी वंश (1451-1526ई.)

बहलोल लोदी	1451-1489ई.
सिकंदर लोदी	1489-1517ई.
इब्राहिम लोदी	1517-1526ई.

सल्तनतकालीन प्रमुख पुस्तके एवं लेखक

पुस्तकें	**लेखक**
किताब-उल हिंद अथवा तहकीक-ए-हिंद	अलबरूनी
शाहनामा	फिरदौसी
तबकात-ए-नासिरी	मिनहाज-ए-सिराज
तारीख-ए-फिरोशाही	जिआउद्दीन बरनी
रेहला	इब्नबतूता
किताब-उल-यामिनी	उत्बी
खजाइन-उल-फुतुह, तुगलकनामा	अमीर खुसरो
श्री कृष्ण विजय	मालाधार बसु

मुगल साम्राज्य

बाबर (1526-1530)

- बाबर ने भारत में 1526 ई. में मुगल साम्राज्य को सथापति किया।
- मुगल शासकों ने खलीफा के आधिपत्य को स्वीकार नहीं किया और वे स्वयं को स्वतंत्र बादशाह मानते थे।
- जहीररूद्दीन मुहम्मद बाबर का जन्म 14 फरवरी, 1483 को फरगना के एक छोटे से राज्य में हुआ।
- वह पिता के वंश की ओर से तैमूर का पांचवां वंशज और माता के वंश की ओर से चंगेज खां के चौदहवें वंशज थे।
- बाबर के पिता का नाम उमर शेख मिर्जा तथा माता का नाम कुतलुग निगार खानम था।
- बाबर ग्यारह वर्ष की आयु में जून 1494 को फरगना की गद्दी पर बैठा।
- बाबर ने 1504 ई. में काबुल पर अधिकार किया और 1507 ई. में 'पादशाह' की उपाधि धारण की ।
- बाबर ने भारत पर साम्राज्य स्थापित करने के लिए पांच बार आक्रमण किया।
- बाबर (1519ई.) अपने पहले अभियान में युसुफजई जाति को पराजित कर बाजौर और भीरा पर अधिकार करके वापस चला गया।
- पानीपत के प्रथम युद्ध (1526ई.) में बाबर ने पहली बार तुगलमा युद्ध पद्धति एवं तोपखाने को सजाने में 'उस्मानी विधि' का प्रयोग किया।

बाबर के प्रमुख युद्ध

युद्ध	तिथि	पक्ष	विजेता
पानीपत का प्रथम युद्ध	21अप्रैल 1526	इब्राहीम लोदी एवं बाबर	बाबर
खानवा का युद्ध	17 मार्च, 1527	राणा सांगा एवं बाबर	बाबर
चंदेरी का युद्ध	29 जनवरी, 1528	मेदनी राय एवं बाबर	बाबर
घाघरा का युद्ध	5 मई, 1529	अफगान एवं बाबर	बाबर

- खानवा के युद्ध में बाबर ने मुसलमानों पर लगने वाले 'तमगा' नामक कर के समाप्ति की घोषणा की ।
- खानवा के युद्ध में विजय के बाद बाबर ने 'गाजी' की उपाधि धारण की था।
- खानवा के युद्ध के समय बाबर ने जिहाद (इस्लाम की रक्षा के लिए धर्मयुद्ध) घोषित कर दिया।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा बाबरनाम में पांच मुस्लिम शासकों के साथ जिन दो हिंदू राज्यों का उल्लेख किया है, उनमें से एक विजयनगर है तथा दूसरा मेवाड़।

- ☞ बाबर ने अपनी आत्मकथा तुजुक-ए-बाबरी (बाबरनामा) तुर्की भाषा में लिखी।
- ☞ बाबर की आत्मकथा का फारसी भाषा में अनुवाद अब्दुल रहीम खानखाना ने किया। इस कार्य में पयांदा खां ने भी सहयोग किया था।
- ☞ बाबर को अपनी उदारता के कारण कलंदर की उपाधि दी गई।
- ☞ बाबर की मृत्यु 26 दिसंबर 1530 को आगरा में हुई।
- ☞ प्रारंभ में बाबर के शव को आगरा के अरामबाग में दफनाया गया।
- ☞ बाद में उसकी पूर्व इच्छानुसार काबुल में उसके द्वारा चुने गए स्थान पर दफनाया गया।
- ☞ बाबर प्रसिद्ध नक्शबंदी सूफी ख्वाजा उबैदुल्ला अहरार का अनुयायी था।
- ☞ बाबर का उत्तराधिकारी हुमायू हुआ।

हुमांयू (1530-1556ई.)

- ☞ बाबर की मृत्यु के पश्चात् उसका ज्येष्ठ पुत्र हुमायू तेईस वर्ष की आयु में सिंहासन पर बैठा।
- ☞ नासिरूद्दीन मुहम्मद हुमायूं, बाबर का ज्येष्ठ पुत्र था।
- ☞ हुमायूं 1508 ई. में (काबूल) पैदा हुआ था।
- ☞ उसकी मां माहम बेगम शिया संप्रदाय से संबंधित थी।
- ☞ हुमायूं ने राज्य के बंटवारे में अपने भाई कामरान को काबूल और कंधार, मिर्जा अस्करी को संभल, मिर्जा हिंदाल को अलवर व मेवात की जांगीरें दी।
- ☞ अपने चचरे भाई सुलेमान मिर्जा को हुमायू ने बदख्शां का प्रदेश दिया।
- ☞ हुमायू का समकालीन अफगान नेता शेर खां था, जो इतिहास में शेरशाह सूरी के नाम से विख्यात हुआ।
- ☞ हुमांयू ने दीनपनाह नामक नए नगर की स्थापना की थी।

हुमायूं के प्रमुख युद्ध

युद्ध	वर्ष	पक्ष	विजेता
चौसा का युद्ध	26 जून, 1539	शेर खां एवं हुमायूं	शेर खां
बिलग्राम का युद्ध	17 मई, 1540	शेर खां एवं हुमायूं	शेर खां

- ☞ चौसा के युद्ध में विजयी होने के पश्चात शेर खां ने 'शेरशाह' की पदवी धारण की।
- ☞ विलग्राम युद्ध में शेर खां ने हुमायु को पराजित कर आगरा एवं दिल्ली पर अधिकार कर लिया।
- ☞ बिलग्राम युद्ध में पराजय के पश्चात हुमायू सिंध व बाद में ईरान चला गया, जहां वह 15 वर्षों (1540-1555ई) तक घुमक्कड़ों जैसा निर्वासित जीवन व्यतीत करता रहा।
- ☞ निर्वासित जीवन व्यतीत करते हुए हुमायू ने हिंदाल के आध्यात्मिक गुरू फारसवासी मीर अली

अकबर जामी की पुत्री हमीदा बानों बेगम से 29 अगस्त, 1541 को निकाह कर लिया।

☞ हमीदा बानों बेगम से ही अकबर का जन्म हुआ।

☞ 22 जून, 1555 में हुमायूं ने सरहिंद के युद्ध में सिकंदर सूर को पराजित करके दिल्ली पर अधिकार कर लिया।

☞ हुमायूनामा की रचना उसकी बहन गुलबदन बेगम ने की थी।

☞ हूमांयू ज्योतिष में विश्वास करता था, इसलिए इसने सप्ताह के सातों दिन, सात रंग के कपड़े पहनने के नियम बनाए।

☞ 27 जनवरी 1556 को दीनपनाह भवन में स्थित पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिरकर हुमायूं की मृत्यू हो गई।

☞ इतिहासकार लेनपूल के शब्दों में – ''हुमायू गिरते-पड़ते इस जीवन से मुक्त हो गया, ठीक उसी तरह जिस तरह वह तमाम जिंदगी गिरते-पड़ते चलता रहा।

शेरशाह सूरी (1540-1545ई.)

☞ शेरशाह का जन्म 1472 ई. में बैजवाड़ा (होशियारपुर) नामक स्थान पर हसन सूर की अफगानी पत्नी के गर्भ से हुआ।

☞ शेरशाह के बचपन का नाम फरीद था। यह सूर वंश से संबंधित था।

☞ शेरशाह के पिता हसन खां जौनपुर राज्य के अंगर्तत सासाराम के जमींदार थे।

☞ दक्षिणी बिहार के तत्कालीन शासक बहार खां लोहानी ने उसकी बहादूरी पर प्रसन्न होकर उसे शेख खां की उपाधि प्रदान की।

☞ शेर खां ने 1540ई. में उत्तर भारत में सूर वंश अथवा द्वितीय अफगान साम्राज्य की स्थापना की।

☞ शेरशाह बिलग्राम युद्ध में (1540ई.) हुमायू को परास्त करने के बाद दिल्ली की गद्दी पर बैठा।

☞ शेरशाह ने 'रोहतासगढ़' किले का निर्माण कराया।

☞ शेरशाह ने 1543-44 ई. में मालदेव को हराकर अजमेर, जोधपुर, मेवाड़ पर अधिकार कर लिया।

☞ शेरशाह का अंतिम युद्ध अभियान 1545 ई. में कालिंजर को माना जाता है।

☞ कालिंजर अभियान के समय 22 मई, 1545 को उक्का नामक आग्येयास्त्र चलाते समय विस्फोट होने से शेरशाह की मृत्यु हो गई।

☞ इस अभियान के समय कालिंजर पर कीरत सिंह का शासन था।

☞ शेरशाह का मकबरा 'सासाराम' में झील के बीच में ऊचे टीले पर निर्मित है।

☞ शेरशाह ने अपनी शिक्षा जौनपुर मे ग्रहण की, जो उस समय उच्च शिक्षा का महत्वपूर्ण केन्द्र था।

☞ शेरशाह सूरी को साम्राज्य निर्माण एवं प्रशासक के रूप में अकबर का पूर्वगामी माना जाता है।

- ☞ शेरशाह द्वारा रोहतासगढ़ किला, किला-ए-कुहना (दिल्ली) नामक मस्जिद का निर्माण करवाया गया।
- ☞ शेरशाह सूरी ने दिल्ली स्थित पुराना किला के भवनों का निर्माण करवाया था।
- ☞ शेरशाह सूरी ने भूमि माप के लिए 30.36 इंच वाला गज-ए-सिकंदरी एवं सन की डंडी का प्रयोग किया।
- ☞ शेरशाह ने 'घोड़ों को दागने' और 'सैनिको की हुलिया' लिखने की प्रथा को प्रारम्भ किया।
- ☞ शेरशाह ने कबूलियत एवं पट्टा प्रथा की शुरूआत किया।
- ☞ शेरशाह ने चांदी का रूपया एवं तांबे के दाम चलवाए।
- ☞ शेरशाह ने 1541ई, में पाटलिपुत्र को पटना के नाम से पुन: स्थापित किया।
- ☞ शेरशाह ने बंगाल के शासक नुसरतशाह को पराजित कर 'हजरत-ए-आला' की उपाधि धाारण की।
- ☞ शेरशाह सूरी ने मारवाड़ के युद्ध में राजपूतों के शौर्य पराक्रम से प्रभावित होकर कहा कि ''मैने एक मुट्टी भर बाजरे के लिए अपना साम्राज्य खो दिया होता'' उस सयम यहां का शासक मालदेव था
- ☞ शेरशाह का उत्तराधिकारी उसका पुत्र इस्लाम शाह हुआ।
- ☞ इस्लाम शाह ने उत्तर-पश्चिम की सीमा की सुरक्षा के लिए वहां पर पांच किलों की एक श्रृंखला खड़ी की । ये किले शेरगढ़ इस्लामगढ़ रसीदगढ़, फीरोजगढ़ और मानकोट में थे। इनकों संयुक्त रूप से 'मानकोट के किले' कहा जाता था।

  नोट- मलिक मुहम्मद जायसी शेरशाह के समकालीन थे।

अकबर (1556-1605ई.)

- ☞ अकबर का जन्म 15 अक्टूबर, 1542 को हुमांयू की पत्नी हमीदा बानू बेगम के गर्भ से अमरकोट के राणा वीरसाल के महल में हुआ
- ☞ अकबर के बचपन का नाम जलाल था।
- ☞ हुमायूं की मृत्यु के समय अकबर पंजाब में था।
- ☞ अकबर का राज्याभिषेक 13 वर्ष की आयु में 14 फरवरी, 1556 को कालानौर मे उसके संरक्षक बैरम खां द्वारा ईटो के सिंहासन पर किया गया।
- ☞ अकबर जलालुद्दीन मुहम्मद अबकर बादशाह गाजी की उपाधि से राजसिंहासन पर बैठा।
- ☞ अकबर का शिक्षक ईरानी विद्वान अब्दुल लतीफ को बनाया गया था।
- ☞ 1556 ई. से 1560 ई. तक बैरम खां अकबर का संरक्षक रहा।
- ☞ बैरम खां की हत्या मक्का तीर्थ यात्रा के दौरान गुजरात में अफगानी व्यक्ति द्वारा कर दी गई।
- ☞ साम्राज्य विस्तार के संदर्भ में अकबर ने सबसे पहला आक्रमण 1561 ई. में मालवा के शासक

बाजबहादुर पर किया।

☞ मुगल सेना ने चांद बीबी के प्रबल विरोध का सामना करने के बावजूद 1600 ई. में अहमदनगर पर विजय प्राप्त कर ली।

☞ अब्दुर्रहीम को खान-खाना की उपाधि प्रदान की गई।

अकबर द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्य

कार्य	वर्ष
दास प्रथा का अंत	1562 ई.
पर्दा शासन का अंत	1562 ई.
तीर्थयात्रा कर की समाप्ति	1563 ई.
जजिया कर की समाप्ति	1564 ई.
फतेहपुर सीकरी की स्थापना एवं आगरा से फतेहपुर सीकरी राजधानी परिवर्तन	1571ई.
इबादतखाना की स्थापना (पूजा गृह)	1579 ई.
मजहर की घोषणा	1579ई.
दीन-ए-इलाही की स्थापना	1582ई.
इलाही संवत की शुरूआत	1583ई.

☞ 5 नवंबर, 1556 को अकबर एवं हेमू के बीच पानीपत का दूसरा युद्ध हुआ।

☞ यूसुफजाइयों के हमले में राजा बीरबल की मृत्यु हो गई।

☞ अकबर ने गुजरात विजय की स्मृति में राजधानी फतेहपुर सीकरी में बुलंद दरवाजा का निर्माण करवाया।

☞ अकबर के समय में 1595 ई. में कंधार प्रांत पहली बार मुगल अधिपत्य में आया था।

☞ अकबर की राजपूत नीति दमन और समझौते पर आधारित थी।

☞ अकबर के समय में पहला विद्रोह 1564 ई. में उज्बेकों द्वारा किया गया।

☞ हल्दीघाटी के युद्ध 1576 ई. मे अकबर का सेनापाति मान सिंह था।

☞ अकबर ने आमेर के राजा भारमल के पुत्र भगवानदास को 'अमीर-उल-उमरा' की उपधि प्रदान किया था।

☞ गुजरात विजय के समय अकबर ने पहली बार समुद्र का दर्शन किया तथा पुर्तगालियों से मिला।

☞ अकबर 1582 ई. में प्रारंभ किए गए दीन-ए-इलाही धर्म का प्रधान संरक्षक था।

☞ अबुल फजल दीन-ए-इलाही धर्म का मुख्य पुरोहित था और इसने अकबरनामा ग्रंथ की रचना भी

की।

नोट - स्मिथ महोदय ने कहा था 'दीन-ए-इलाही अकबर की मूर्खता का स्मारक है, उसकी बुद्धिमत्ता का नही।

- ☞ अबुल फजल का बड़ा भाई फैजी, अकबर के दरबार में राजकवि के पद पर आसीन था।
- ☞ बीरबल दीन-ए-इलाही धर्म स्वीकारने वाला प्रथम एवं अंतिम हिंदू था।
- ☞ बीरबल का बचपन का नाम महेश दास था।
- ☞ अकबर द्वारा जैन आचार्य हरिविजय सूरी को 'जगतगुरू' तथा जिन चंद्र सूरी को 'युग प्रधान' की उपाधि प्रदान की गई।
- ☞ अकबर ने बीरबल को 'राजा' और 'कविराय' की उपाधि के सम्मानित किया था।
- ☞ अकबर के दरबार में 'रहीम' अथवा अब्दुर्रहीम हिंदी के प्रसिद्ध कवि थे।
- ☞ 'मजहर' नामक दस्तावेज का प्रारूप 'शेख मुबारक' ने तैयार किया था।
- ☞ शेख मुबारक, अबुल फजल एवं फैजी के पिता थे।
- ☞ अकबर के दीवान टोडरमल ने भू-राजस्व के क्षेत्र में ख्याति अर्जित की थी।
- ☞ टोडरमल ने भू-राजस्व के लिए दहसाला व्यवस्था लागू की था।
- ☞ अकबर ने अपने शासन के 24 वे वर्ष में 'आइने-दहसाला' या 'जब्ती प्रणाली' नामक नई कर प्रणाली शुरू की।
- ☞ इस प्रणाली के अंतर्गत अलग-अलग फसलों से पिछले दस वर्ष के उत्पादन और उसी समय के उनके प्रचलित मूल्यों का औसत निकाल कर औसत का एक-तिहाई हिस्सा राजस्व वसूला जाता था।
- ☞ अकबर द्वारा राम-सीता की आकृतियों और 'रामसीय' देवनागरी लेख से युक्त सिक्के चलाए गए थे।
- ☞ अकबर के दरबार में प्रसिद्ध संगीतकार 'तानसेन' रहते थें।
- ☞ अकबर ने तानसेन को 'कण्ठाभरणवाणीविलास' की उपाधि दी थी।
- ☞ तानसेन का जन्म ग्वालियर के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था।
- ☞ तानसेन का मूल नाम रामतनु पांडेय था।
- ☞ तानसेन की प्रमुख कृतियां मियां की टोडी, मियां की मल्हार, दरबारी कान्हरा और मियां का सारंग आदि है।
- ☞ अकबर के समय में स्वामी हरिदास एक महान संगीतकार थे। वे वृदांवन में रहकर भगवान कृष्णा के लिए गीत गाते थे।
- ☞ स्वामी हरिदास द्वारा अकबर के दरबार में उपस्थित होने से मना करने के बाद अकबर को संगीत सुनने के लिए स्वयं उनकी कुटी में जाना पड़ा था।

☞ अकबर के दरबार का प्रसिद्ध चित्रकार अब्दुस समद, दसवंत एवं बसावन थे।

☞ बाजबहादुर, बाबा रामदास एवं बैजू बावरा अकबर के शासनकाल के प्रमुख संगीतकार थे।

☞ अकबर के शासन प्रणाली की प्रमुख विशेषता मनसबदाी व्यवस्था थी।

☞ मनसबदारी व्यवस्था मध्य एशिया (मंगोलिया) से ग्रहण किया गया और इसकी प्रेरणा खलीफा 'अब्बा सईद' से मिली थी।

☞ माहम अनगा के पुत्र अधम खां को 1562 ई. में अकबर ने मरवा दिया था।

☞ अधम खां ने अकबर के वकील अतका खां की हत्या कर दी थी।

☞ मेवाड़ राज्य ने अकबर की संप्रभुता स्वीकार नहीं की थी।

☞ राणा प्रताप की मृत्यु के बाद उनके पुत्र राणा अमर सिंह ने 1615 ई. में जहांगीर से संधि की थी

☞ 1580 ई. में जौनपुर के एक धर्मगुरू मुल्ला यजदी ने सभी मुस्लिमों को अकबर के विरूद्ध करने के लिए फतवा जारी किया था।

☞ अकबर द्वारा निर्मित फतेहपुर सीकरी के पंजमहल इमारत का नक्शा बौद्ध विहार की तरह है।

☞ बीरबल, अबुल फजल, तानसेन, टोटरमल, फैजी, मान सिंह, अब्दुल सहीम खानखाना, मूल्ला दो प्याजा और फकीर अजीउद्दीन अकबर के दरबार के नौ रत्न थे।

☞ जहांगीर के निर्देश पर दक्षिण से आगरा आते समय 1602 में वीर सिंह बुंदेला नामक सरदार ने अबुल फजल की हत्या कर दिया।

☞ अकबर ने अनुवाद विभाग की स्थापना किया था, जिसका प्रधान फैजी था।

☞ अकबर की इच्छानुसार, अब्दुल कादिर बदायूंनी ने रामायण का फारसी मे अनुवाद किया था।

☞ 'फैजी' ने लीलावती तथा अबुल फजल ने 'कालिया दमन' का फारसी में अनुवाद किया।

☞ अकबर का काल 'हिदी साहित्य का स्वर्णकाल' कहा जाता है।

☞ अकबर ने बीरबल को कविप्रिय तथा नरहरि को 'महापात्र' की उपाधि प्रदान किया था।

☞ अकबर के समकालीन प्रसिद्ध सूफी संत शेख सलीम चिश्ती थे।2

☞ अकबर, इंग्लैड की रानी एलिजाबेथ-I का समकालीन था।

☞ दिसंबर, 1600 में ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना के सयम इंग्लैण्ड की रानी एलिजाबेथ थी।

☞ रॉल्फ फिंच (1583-91ई.) फतेहपुर सीकरी और आगरा पहुंचने वाला पहला अंग्रेज व्यापारी था।

☞ मुगलों की राजकीय भाषा फारसी थी।

☞ अकबर नक्कारा (नगाड़ा) नामक वाद्य यंत्र बजाता था।

☞ अकबर की मृत्यु 16 अक्टूबर 1605 की पेचिश से हुई।

☞ अकबर को आगरा के निकट सिंकदरा में दफनाया गया।

जहांगीर (1605-1627ई.)

- मुगल बादशाह अकबर के पुत्र जहांगीर (सलीम) का जन्म 30 अगस्त, 1569 को फतेहपुर सीकरी में स्थित शेख सलीम चिश्ची की कुटिया में आमेर (जयपुर) के राजा भारमल की पुत्री मरियम उज्जमानी के गर्भ से हुआ।
- मरियम उज्जमानी का वास्तविक नाम हरखा बाई था।
- अकबर ने सूफी संत सलीम चिश्ती के नाम पर इसका नाम सलीम रखा था।
- सलीम का मुख्य शिक्षक अब्दुर्रहीम खानखाना था।
- अकबर की मृत्यु के बाद 3 नवंबर, 1605 को आगरा के किले में सलीम का राज्याभिषेक हुआ।
- राज्याभिषेक के बाद उसने 'नूरूद्दीन मुहम्मद जहांगीर बादशाह गाजी' की उपाधि धारण की।
- जहांगीर की बारह घोषणाओं को आईन जहांगीरी कहा जाता है।
- जहांगीर के ज्येष्ठ पुत्र खुसरो ने 1606 ई. में विद्रोह किया। खुर्रम ने 1622 ई. में खुसरों को मरवा दिया।
- खुसरों को सहायता देने के अपराध में सिखों के पांचवे गुरू अर्जुन देव को मृत्युदंड दिया गया।
- 1611 ई. में जहांगीर ने मेहरून्निसा (नूरजहां) से विवाह करके उसे 'नूर महल' की उपाधि दी।
- इससे पूर्व मेहरून्निसा अलीकुली बेग की पत्नी थी।
- जहांगीर ने एक शेर को मारने के कारण अलीकुली बेग को शेर अफगान की उपाधि दिया था।
- शेर अफगान की मृत्यु के बाद मेहरून्निसा अकबर की विधवा सलीमा बेगम की सेवा में नियुक्त थी।
- मेहरून्निसा और शेर अफगान की पुत्री लाडो बेगम का विवाह जहांगीर के पुत्र शहरयार के साथ हुआ था।
- जहांगीर ने नूरजहां के पिता गयासबेग को दीवान नियुक्त करके उसे 'इत्माद उद दौला की उपाधि प्रदान किया।
- जहांगीर ने अपने साम्राज्य मे तंबाकू पर प्रतिबंध लगा दिया था।

नोट- नूरजहां ने एक दल बनाया जिसे 'जुन्ता दल' कहते थे।

- दु-अस्पा एवं सिह-अस्पा प्रथा जहांगीर ने चलाई थी।
- सर्वप्रथम यह पद जहांगीर के सेनापति महावत खां को दिया गया था।
- 1615 ई. में राणा अमर सिंह तथा मुगल बादशाह जहांगीर के मध्य चित्तौड़गढ़ की संधि हुई।
- जहांगीर के पांच पुत्र थे- 1.खुसरो, 2. परवेजए 3. खुर्रम, 4. शहरयार और 5. जहांदार।
- 1623 ई. में खुर्रम (शाहजहां) ने विद्रोह कर दिया, जिसे महावत खां ने दबा दिया।

- ☞ मुगल चित्रकला अपने चरमोत्कर्ष पर जहांगीर के शासनकाल में पहुंची।
- ☞ जहांगीर ने अकारिजा की देख-रेख में आगरा में एक चित्रशाला की स्थापना की।
- ☞ जहांगीर का शासनकाल 'चित्रकला का स्वर्णकाल' माना जाता है।
- ☞ जहांगीर के समय के सर्वोत्कृष्ट चित्रकार उस्ताद मंसूर और अबुल हसन थे।
- ☞ सम्राट जहांगीर ने उस्ताद मंसूर को 'नादिर-उल-अस्त्र तथा अबुल हसन को व्यक्ति चित्र में महारत हासिल थी।
- ☞ उस्ताद मंसूर प्रसिद्ध पक्षी विशेषज्ञ चित्रकार था, जबकि अबुल हसन को व्यक्ति चित्र में महारत हासिल थी।
- ☞ जहांगीर ने अपनी आत्मकथा 'तुजुक-ए-जहांगीरी फारसी भाषा में लिखा।
- ☞ नुरजहां ने अपने पिता 'एत्मादुद्दौला का मकबरा' 1622-28 ई. के मध्य में बनवाया।

नोट- एत्मादृद्दौला का मकबरा पूर्णतया संगमरमर से बनाई गई पहली कृति है।

- ☞ एत्माद्द्दौला के मकबरे में सर्वप्रथम पित्रादुरा शैली (जड़ावट) का प्रयोग हुआ था।
- ☞ अशोक के कौशांबी स्तंभ पर जहांगीर का लेख उत्कीर्ण है।
- ☞ विलियम हॉकिन्स मुगल दरबार में 1608 ई. में आया था।
- ☞ जहांगीर ने हॉकिन्स को 400 का मनसब प्रदान किया था।
- ☞ जहांगीर ने हॉकिन्स को 'इंग्लिश खा' की उपाधि देकर आर्मीनिया की एक स्त्री से उसका विवाह कर दिया।
- ☞ शहादरा (लाहौर) के एक बाग में जहांगीर को दफना दिया गया।
- ☞ जहांगीर के मकबरे का निर्माण नूरजहां ने करवाया।
- ☞ जहांगीर के दरबार में आने वाला ब्रिटिश सम्राट प्रथम का राजदूत सर टॉमस रो था।

शाहजहां (1627-1658ई.)

- ☞ शाहजहां का जन्म जनवरी, 1592 को जहांगीर की पत्नी जगत गोसाई मानवती (राजपूत) के गर्भ से लाहौर में हुआ था।
- ☞ जगत गोसाई जोधपुर के शासक मोटा राजा उदय सिंह की पुत्री थी।
- ☞ शाहजहां के बचपन का नाम खुर्रम था।
- ☞ 1612 ई. में खुर्रम का विवाह आसफ खां की पुत्री 'अर्जुमंद बानो बेगम से हुआ।
- ☞ अर्जुमुद बानो बेगम' कालांतर में मुमताज महल के नाम से विख्यात हुई।
- ☞ शाहजहां ने आसफ खां को वजीर का पद एवं महावत खां को खानखाना की उपाधि प्रदान की।
- ☞ जहांगीर की मृत्यु के बाद उसके पुत्र शाहजहां का फरवरी, 1628 में आगरा में राज्यारोहण हुआ

- ☞ जुझार सिंह के नेतृत्व में (1628-29ई.) बुंदेलों ने भी विद्रोह कर दिया।
- ☞ शाहजंहा ने 1632 ई. में हुगली स्थित पुर्तगालियों के विरूद्ध अभियान छेड़ा, जिसमें पुर्तगाली पराजित हुए।
- ☞ मुमताज महल की मृत्यु जून 1631 में प्रसव पीड़ा के कारण हो गई।
- ☞ मुमताज महल की मृत्यु के बाद उसकी स्मृति में शाहजहां ने उसकी कब्र पर ताजमहल का निर्माण करवाया।
- ☞ ताजमहल का निर्माण करने वाला मुख्य स्थापत्य कलाकार उस्ताद अहमद लाहौरी था।

  नोट - लाल किला का निर्माण 'हमीद अहमद' नामक शिल्पकार की देख-रेख में सपन्न हुआ था
- ☞ शाहजहां ने दक्षिण भारत में सर्वप्रथम अहमदनगर पर आक्रमण किया और 1633 ई. में उसे जीतकर मुगल साम्राज्य में मिला लिया।
- ☞ शाहजहां को मुहम्मद सैय्यद (मीर जुमला) ने कोहिनूर हीरा भेट किया था।
- ☞ मीर जुमला गोलकुंडा के सुल्तान अब्दुल्लाह कुतुबशाह का प्रधानमंत्री था।
- ☞ शाहजहां ने 1638 ई. में अपनी राजधानी आगरा से दिल्ली स्थानांतरित किया।
- ☞ शाहजहां ने यमुना नदी के दाहिनी तट पर शाहजहांनाबाद की नीवं डाली।
- ☞ शाहजहां के शासनकाल में दाराशिकोह ने उपरषिदों का फारसी भाषा में अनुवाद सिर्र-ए-अकबर नाम से किया था।
- ☞ शाहजहां ने ईरानी, फारसी पद्य शैली के कवि कलीम को 'राजकवि'नियुक्त किया।
- ☞ शाहजहां ने बलबन द्वारा प्रारंभ किए गए दरबारी रिवाज 'सिजदा' का समाप्त कर दिया।
- ☞ शाहजहां के चार पुत्र -दारा, शाहशुजा, औरंगजेब और मुराद थे।
- ☞ सिंतबर 1657 में शाहजहां गंभीर रूप से बीमार हुआ और उसकी मृत्यु की अफवाह फैल गई, जिसके परिणामस्वरूप उसके पुत्रों में उत्तराधिकारी का युद्ध प्रारंभ हो गया।
- ☞ शाहजहां ने दाराशिकोह को 'शाह बुलंद इकबाल' की उपाधि प्रदान की थी।
- ☞ अप्रैल, 1658 को धरमत का युद्ध शाही सेना एवं औरगजेब के बीच हुआ, जिसमें शाही सेना की पराजय हुई।
- ☞ मई, 1658 को सामूगढ़ का युद्ध दाराशिकोह एवं औरंगजेब के बीच हुआ, इसमें दारा की पराजय हुई।
- ☞ मार्च 1659 में देवराई की घाटी में दारा और औरंगजेब के मध्य उत्तराधिकार का अंमित युद्ध हुआ
- ☞ देवराई के युद्ध मे दारा की पराजय हुई और वह भटकता हुआ दादर के जमीदार मलिक जीवन के पास पहुचा।

- ☞ मलिक जीवन ने छलपूर्वक दारा को बंदी बनाकर औरगंजेब को सौप दिया।
- ☞ औरंगजेब ने दारा को बुरी तरह से अपमानित करवाने के बाद उसकी हत्या करवा दिया।

नोट – ए.एल. श्रीवास्वत ने शाहजहां के शासनकाल को मुगलकाल का 'स्वर्ण काल' कहा है।

- ☞ शाहजहां की मृत्यु 22 जनवरी, 1666 को हुई।
- ☞ शाहजहां को ताजमहल में उसकी पत्नी के कब्र के निकट दफनाया गया।

दाराशिकोह

- ☞ दाराशिकोह का जन्म 1615 ई. में शाहजहां की प्रिय पत्नी मुमताज महल के गर्भ से हुआ था।
- ☞ दारा की उसकी सहिष्णुता एवं उदारता के लिए लेनपूल ने उसे 'लघु अकबर' की संज्ञा दी है।
- ☞ शाहजहां के पुत्र दाराशिकोह ने उपनिषद, भगवद्गीता, योगवशिष्ठ और रामायण का अनुवाद फारसी में करवाया था।
- ☞ 'मज्म-उल-बरहीन' दाराशिकोह की मूल रचना है।

औरंगजेब (1658-1707 ई.)

- ☞ मुइडद्दीन मुहम्मद औरंगजेब का जन्म 3 नवंबर, 1618 को उज्जैन के निकट 'दोहद' नामक स्थान पर शाहजहां की पत्नी मुमताज महल से हुआ।
- ☞ औरगजेब ने 21 जुलाई, 1658 को अपना पहला राज्यभिषेक कराया और दूसरा राज्यभिषेक 5 जून, 1659 को दिल्ली मे ही करवाया।
- ☞ औरंगजेब को जिंदा पीर कहा जाता था।
- ☞ जयसिंह एवं शिवाजी में मध्य 11 जून, 1665 को पुरंदर की संधि हुई।
- ☞ मिर्जा राजा जयसिंह के आश्वासन पर 12 मई 1666 को शिवाजी अपने पुत्र शम्भा जी के साथ औरंगजेब के दरबार में उपस्थित हुए, जहां छलपूर्वक उन्हें गिरफ्तार करके जयपुर भवन में रखा गया।
- ☞ शिवाजी अपनी कूटनीति से औरंगजेब की गिरफ्तारी से बच निकले।
- ☞ औरगजेब ने इस्लाम धर्म स्वीकार न करने के कारण 1675 ई. में सिखों के नवे गुरू तेगबहादुर की हत्या करवा दिया।
- ☞ औरंगजेब ने जनता के आर्थिक कष्टों के निवारण के लिए 'राहदारी' (आंतरिक पारगमन शुल्क) और पानदारी (व्यापारिक चुंगियों) आदि प्रमुख आबवाबों (स्थानीय करों) को समाप्त कर दिया।
- ☞ औरंगजेब कट्टर सुन्नी मुसलमान था।
- ☞ औरंगजेब द्वारा 1679 में जजिया कर पुनः लागू किया।
- ☞ औरंगजब द्वारा 1679 में औरंगाबाद (महाराष्ट्र) में बीबी का मकबरा का निर्माण करवाया गया।
- ☞ नोट बीबी का मकबरा को द्वितीय ताजमहल भी कहा जाता है।

- औरंगजेब ने 1686 ई. में बीजापुर को मुगल साम्राज्य मे मिला लिया।
- औरंगजेब द्वारा 1687 ई. में गोलकुडा को मुगल साम्राज्य मे मिला लिया गया
- मदन्ना एवं अकन्ना नामक ब्राह्मणों का संबंध गोलकुंडा के शासक अबुल हसन से था।
- औरंगजेब के शासनकाल में मुगल सेना मे सर्वाधिक हिंदू सेनापति थे।
- औरंगजेब ने गुरूवार (जुमेरात) की रात को पीरो की मजार एवं अन्य कब्रो पर दीये जलाने की प्रथा को बंद करवा दिया।
- औरंगजेब का लक्ष्य इस देश को दार-उल-हर्ब के स्थान पर दार-उल-इस्लाम देश बनाया था।
- औरगजेब का लक्ष्य इस देश को दार-उल-हर्ब के स्थान पर दार-जल-इस्लाम देश बनाना था।
- औरंगजेब ने हिंदू त्योहारों और उत्सवों को मनाए जाने पर रोक लगा दी।
- औरंगजेब के शासनकाल में जाट नेता गोकुल और राजाराम के नेत्त्व में विद्रोह हुआ।
- इस विद्रोह का दमन 1670 ई. में किया गया, जिसमे गोकुल की मृत्यु हो गई।
- औरगजेब के दक्षिण अभियान में व्यस्त होने का फायदा उठाकर (1686-88 ई.) राजाराज के नेतृत्व में पुन: विद्रोह प्रारंभ हो गया, जिसमें जाटों ने सिकंदरा में स्थित अकबर के मकबरे में लूटपाट की।
- भरतपुर राजवंश की नीव औरंगजेब के शासनकाल में जाट नेता एवं राजाराम के भतीजा चूड़ामन ने डाली।
- औरंगजेब ने जाटों को पूर्णत: समाप्त करने के लिए आमेर के राजा विशन सिंह कछवाहा को नियुक्त किया।
- विशन सिंह चुड़ामन को पराजित कर उसके साम्राज्य पर अकिकार कर लिया ।
- औरंगजेब वीणा नामक वाद्य यंत्र बजाने में दक्ष था।
- औरंगजेब ने दरबार में तत्कालीन इतिहास लिखने पर पाबंदी लगा दी।
- औरंगजेब ने संगीत पर प्रतिबंध लगा दिया था।
- औरंगजेब के शासनकाल में फारसी भाषा में शास्त्रीय संगीत पर सर्वाधिक पुस्तकें लिखी गई।
- औरंगजेब ने सिक्कों पर कलमा खुदवाना, नवरोज त्योहार मनाना भांग की खेती करना, झरोखा दर्शन, गीत-संगीत आदि पर प्रतिबंध लगा दिया।
- औरंगजेब का चिकित्सक 'फ्रांकोइस बर्नियर' था, जो एक फ्रांसिसी यात्री था।
- औरंगजेब की मृत्यु 20 फरवरी या 3 मार्च, 1707 के अहमदनगर में हुई।
- औरंगजेब का दौलताबाद से चार मील दूर सूफी संत 'जैन-उद-दीन शिराजी' के मजार के निकट दफना दिया गया।

मुगल शासन व्यवस्था

- ☞ मुगलों के राजत्व सिंद्धांत का मूलाधार 'शरीअत' (कुरान एवं हदीस का सम्मिलित नाम)था।
- ☞ मुगलकालीन शासन व्यवस्था अत्यधिक केंद्रीकृत थी, जो 'नियंत्रण एवं संतुलन' पर आधारित थी।
- ☞ मंत्रिपरिषद के लिए 'विजारत' शब्द का प्रयोग किया जाता था।
- ☞ मुगल प्रधानमंत्री को 'वकील' कहा जाता था।
- ☞ वकील की सहायता के लिए दीवान, मीरबख्शी, मीर सामान और सद्र-उस-सदूर नामक पदाधिकारी होते थे।
- ☞ वकील की शक्तियों को सीमित करने के लिए अकबर ने दीवान की शक्तियों में वृद्धि किया।
- ☞ अकबर ने अपने शासनकाल के 8 वे वर्ष एक नया पद 'दीवान-ए-विजारत ए-कुल की स्थापना की।
- ☞ औरंगजेब के शासनकाल में 'असद खा' ने सर्वाधिक 31 वर्षो तक दीवान पद पर कार्य किया।
- ☞ मुगलकाल में मीर बख्शी सैन्य विभाग का प्रधान था।
- ☞ मीर बख्शी सैन्य विभाग के वेतन के लिए भी उत्तरदायी था।
- ☞ मीरबख्शी द्वारा 'सदखत' नामक प्रमाण-पत्र जारी करने के बाद सैनिकों को वेतन मिलता था।
- ☞ मुगल प्रशासनिक शब्दावली में 'माल' शब्द भू-राजस्व से संबंधित था।
- ☞ मुगल प्रशासन में मोहतसिब जन-आचरण के निरीक्षण विभाग का प्रधान था।
- ☞ अकबर ने वेश्याओं को नगर से निष्कासित कर एक नए स्थान पर बसाया और उसका नाम 'शैतानपुरी' रखा।
- ☞ मनसबदारी व्यवस्था एक विशिष्ट प्रशासनिक व्यवस्था थी, जिसका प्रचलन मुगल शासक अकबर द्वारा किया गया था।
- ☞ मुगलों की सैन्य व्यवस्था दशमलव प्रणाली पर आधारित थी।
- ☞ मनसब शब्द का अर्थ 'श्रेणी' अथवा 'पद' होता है।
- ☞ मनसबदारी व्यवस्था के अंतर्गत 33 वर्ग थे।
- ☞ अकबर ने शासन के 40 वे वर्ष जात एवं सवार जैसी दोहरी व्यवस्था लागू की।
- ☞ मध्यकालीन भारत में राज्य की आय का प्रमुख स्त्रोत भू-राजस्व था।
- ☞ किसी शहजादे द्वारा दिया जाने वाला ओदश-पत्र 'निशान' कहलाता था।
- ☞ शाही आदेश या शाही आज्ञा को 'फरमान' कहा जाता था।
- ☞ 'अल्तमगा जागीर' की शुरूआत जहांगीर के समय में हुई।

- ☞ न्याय विभाग का प्रमुख 'काजी-उल-कुजात' होता था।
- ☞ शाही गृह विभाग का प्रधान अकिरी 'मीरे सामान' ने अथवा 'खाने समां' के नाम से भी जाना जाता था।
- ☞ 'तनव' भूमि माप के लिए प्रयुक्त लोहे के कड़ों से युक्त बांस की छड़ थी।